Arnava अर्णव

Vol. XII No.1 Annual Year 2023 ISSN 2320-0103

डॉ. मोहन लाल चढ़ार* नागेन्द्र शुक्ला**

मऊ ग्राम से प्राप्त कलचुरीकालीन नवीन प्रतिमाएँ

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में ग्राम मऊ के खेरमाता मढ़िया परिसर से प्राप्त नवीन कलचुरी कालीन प्रतिमाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। मऊ मध्यप्रदेश के शहडोल जिले के ब्यौहारी तहसील के अंतर्गत आता है। इस पुरास्थल से शैव, वैष्णव, शाक्त एवं जैन धर्म से संबंधित प्रतिमाएँ प्राप्त हुई है। यहाँ से प्राप्त प्रतिमाएं कलचुरी कालीन कला में निर्मित हैं। ये प्रतिमाएँ लगभग दसवीं शती ई. से लेकर बारहवीं शती ईस्वी तक की हैं। इन प्रतिमाओं का निर्माण लाल एवं भूरे बलुआ प्रस्तरों से किया गया है। इस शोध लेख में मऊ से प्राप्त शैव, शाक्त, सूर्य एवं अन्य प्रतिमाओं का सूक्ष्म विवरण दिया गया हैं। इन प्रतिमाओं में शिव, पार्वती, कार्तिकेय, शैवाचार्य, सूर्य, ब्रह्माणी, अग्नि एवं अन्य प्रतिमाओं पर विशेष प्रकाश डाला गया है। इस शोध पत्र के माध्यम से बघेलखण्ड क्षेत्र में मुख्य रूप से शैव, सौर एवं शाक्त सम्प्रदायों के प्रचार प्रसार की जानकारी भी दी गई है।

प्रमुख शब्द : धर्म, सम्प्रदाय, कला, प्रतिमाशास्त्र, संस्कृति, मंदिर, इतिहास।

Abstract

In the present research paper, an analytical study has been done of the newly discovered Kalchuri sculptures obtained from the Khermata Madhia complex of village Mau. Mau comes under Beohari tehsil of Shahdol district in Madhya Pradesh. Statues related to Shaiva, Vaishnava, Shakta and Jainans have been found from this ancient site. The idols obtained from here are made in Kalchuri period's art style. These sculptures are dated from circa 10th century CE

*सह–प्रोफेसर, प्रा.भा.इ.सं. तथा पुरातत्व, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक

**शोध छात्र, प्रा.भा.इ.सं. तथा पुरातत्व, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक

to 12th century CE. These idols have been made of red and brown sandstone. In this research article, detailed description of Shaiva, Shakta, Surya and other idols obtained from Mau has been given. Shiva, Parvati, Ganesha, Kartikeya, Shaivacharyas, Surya, Brahmani, Agni and other idols have been highlighted in these icons. Through this research paper, information has also been given about the propagation of mainly Shaiva, Saur and Shakta sects in Baghelkhand region.

Keyword : Religion, Sect, Art, Iconography, Culture, Temple, History.

प्रस्तावना

मऊ ग्राम 24° 4′ 53′′ उत्तर अक्षांश एवं 81° 22′ 38′′ पूर्वी देशान्तर में स्थित है। मऊ ग्राम मध्यप्रदेश के शहडोल जिले के ब्यौहारी तहसील के अंतर्गत आता है। इस तहसील के उत्तर–पश्चिम में सोन व उसकी सहायक नदी समधिन बहती है। मऊ ग्राम के उत्तर में चरकी घाटी, गोविन्दगढ़ घाटी की पहाड़ियाँ है, पश्चिम में मुरचौर व दक्षिण–पश्चिम में बांधवगढ़ की पहाड़ियाँ स्थित हैं। इस क्षेत्र का भूभाग बघेलखंड पठार के अंतर्गत आता है। शहडोल जिले के शोहागपुर, अंतरा, विराट मंदिर एवं मऊ ग्राम से कलचुरीकालीन प्रतिमाएँ एवं मंदिरों के पुरावशेष प्राप्त हुए हैं, जो इस क्षेत्र की प्राचीनता को दर्शाते हैं। इस क्षेत्र से शैव, वैष्णव, शाक्त व जैन धर्म से संबंधित प्रतिमाएँ प्राप्त हुई हैं (शर्मा, 1971: 400–447)।

मऊ ग्राम में स्थित खेरमाता मढ़िया परिसर की सफाई के दौरान अभी हाल में प्राचीन मंदिर के अनेक पुरावशेष एवं मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। पूर्व में इस क्षेत्र से 2020–21 में पुरातत्व अभिलेखागार एवं संग्रहालय मध्यप्रदेश शासन, भोपाल को भी अनेक प्रतिमाएं यहाँ से प्राप्त हुई थीं (महोबिया एवं पराजपे, 2021: 2)। यहाँ से प्राप्त समस्त पुरावशेषों को खेरमाता मढ़िया के समीप स्थित कमरे में सुरक्षित रखा गया है। यहाँ से वैष्णव, शैव शाक्त व जैन धर्म से संबंधित मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। इस ग्राम से कलचुरी कालीन मंदिर के अवशेष, मृदभांड, लौह उपकरण भी प्राप्त हुए हैं। यहाँ से प्राप्त पुरावशेष कलचुरी कालीन हैं। कला के आधार पर इन प्रतिमाओं का समय लगभग दसवीं शती ईस्वी से लेकर बारहवीं शती ईस्वी माना जा सकता है। इस पुरास्थल से प्राप्त प्रतिमाओं का निर्माण लाल व भूरे बलुआ पत्थर पर हुआ है। इस पुरास्थल से प्राप्त प्रतिमाओं का विस्तार से विवरण अग्रप्रकार है।

चित्र सं.1 : उमा–महेश्वर प्रतिमा

उमा महेश्वर प्रतिमा (चित्र सं. 1)

विष्णुधर्मोत्तरपुराण के अनुसार उमा–महेश्वर प्रतिमा में उमा और शिव को एक ही पीठिका पर आलिंगन करते हुए प्रदर्शित किया जाना चाहिए। जटा–जूटधारी शिव के दाहिने हाथ में नीलोत्पल कमल तथा बायाँ हाथ उमा के कंधे पर दिखाना चाहिए। उमा का दाहिना हाथ शिव के कंधे पर और बाँये हाथ में कमल पुष्प प्रदर्शित किया जाना चाहिए (श्रीवास्तव, 2010:63)। मऊ ग्राम से प्राप्त उमा महेश्वर की यह प्रतिमा खण्डित अवस्था में है, शिव व उमा ललितासन मुद्रा में आसीन हैं। शिव का केवल एक बायाँ हाथ सुरक्षित है, जो उमा के पीठ के पीछे होता हुआ कमर पर टिका हुआ है। देवी उमा का सिर व हाथ खण्डित अवस्था में हैं। उमा व शिव को आभूषणों से सुसज्जित दिखाया गया है। उमा के गले में हार का सुन्दर अंकन किया गया है। भगवान शिव को गले में हार एवं यज्ञोपवीत धारण किए हुए दिखाया गया है। इस

प्रतिमा की माप 71×51×25 सेन्टीमीटर है। (चित्र सं. 1) कला के आधार पर यह मूर्ति कलचुरीकालीन है। इस प्रतिमा का काल लगभग बारहवीं शती ईस्वी है। यह मूर्ति भूरे बलुआ पत्थर से निर्मित है।

चित्र सं. 2 : उमा–महेश्वर प्रतिमा

उमा महेश्वर प्रतिमा (चित्र सं. 2)

यह उमा महेश्वर की प्रतिमा भूरे बलुआ पत्थर पर निर्मित है। उमा महेश्वर की यह प्रतिमा ललितासन मुद्रा में बनाई गयी हैं। प्रतिमा में उमा एवं महेश्वर को विविध आभूषणों से युक्त दिखाया गया हैं। महेश्वर की प्रतिमा चतुर्भुजी है, उमा के हस्त भग्न होने के कारण अस्पष्ट हैं। महेश्वर के ऊपरी दाएं हाथ में त्रिशूल व निचले दाये हाथ में पुष्प अंकित हैं। महेश्वर का ऊपरी बायाँ हाथ उमा के कंधे पर दिखाया गया हैं। महेश्वर को जटा मुकुट व उमा को मुकुट से अलंकृत किया गया हैं। महेश्वर को कर्ण

कुंडल, कंठहार, एकावली एवं उमा के गले में हार, कर्ण कुंडल का सुन्दर अंकन किया गया है। इस प्रतिमा की माप 20×13×5 सेन्टीमीटर है (चित्र सं. 2)। कला के आधार पर यह मूर्ति कलचुरीकालीन है। इस प्रतिमा का काल लगभग बारहवीं शती ईस्वी हैं।

शिव प्रतिमा (चित्र सं. 3)

मऊ ग्राम से शिव की कलात्मक चतुर्भुजी स्थानक प्रतिमा प्राप्त हुई है। शिव के बाएं ओर के दोनों हाथ खण्डित है। दोनों पैर घुटनों से नीचे टूट चुके हैं। शिव के मुख मण्डल को मनमोहक बनाया गया है। भगवान शिव के सिर पर आकर्शक जटा मुकुट, कानों में कुंडल, गले में हार का अंकन किया गया हैं। शिव के ऊपरी दाएं हाथ में त्रिशूल व निचले दाएं हाथ में अक्षमाला लिये बनाया गया हैं। इस प्रतिमा की माप 43×18×8 सेन्टीमीटर है। कला–कौशल के आधार पर यह मूर्ति कलचुरी कालीन है (चित्र सं. 3)। यह मूर्ति भूरे बलुआ पत्थर पर निर्मित है। यह प्रतिमा लगभग दसवीं–ग्यारहवीं शती ईस्वी की है (महोबिया एवं पराजपे, 2021: 24)।

चित्र सं. 3 : शिव प्रतिमा

शिवलिंग प्रतिमा (चित्र सं. 4)

भारत में शिवलिंग की पूजा आराधना प्राचीन काल से की जाती रही है। महाकाव्यों रामायण व महाभारत में शिवलिंग को सृष्टि की उत्पत्ति का मूल साधन

चित्र सं. 4 : शिवलिंग

माना गया है (चढ़ार, 2017: 91)। महाभारत में लिंगोपसना का विस्तार से वर्णन मिलता हैं। पुराणों में वर्णित शिवलिंगों का उद्‌भव और उसका महत्व परिलक्षित होता है (राव, 1956 : 91)। प्राचीन काल से शिवलिंग मुख्य रुप से प्राकृतिक शिवलिंग, त्रैराशिक शिवलिंग, मुखलिंग, अष्टोत्तरशिवलिंग व सहस्त्र शिवलिंग बनाये जाते रहे हैं। त्रैराशिक शिवलिंग उन्हें कहा जाता है जिनमें एक निश्चित मापदण्ड तहत तीन भाग मे निर्मित होते हैं। यथा भोग पीठ–वृत्ताकार, भद्रपीठ–अष्टकोणीय तथा ब्रह्मपीठ को चौकोर बनाया जाता हैं। भोगपीठ पर ब्रह्मसूत्र रेखाओं का अंकन होता हैं (श्रीवास्तव, 2010: 59)। मऊ ग्राम से प्राप्त त्रैराशिक शिवलिंग के तीन भाग हैं। इस शिवलिंग का माप 66×61×3 सेन्टीमीटर हैं। इस प्रकार के शिवलिंग कलचुरी कालीन मंदिरों में मुख्य रुप से मिलते हैं। यह शिवलिंग भूरे बलुआ पत्थर पर निर्मित है (चित्र

सं. 4)।

नटेश शिव प्रतिमा (चित्र सं. 5)

भगवान शिव को नृत्य के जनक के रूप में भी जाना जाता है। शैवागमों के अनुसार शिव ने 108 मुद्राओं में नृत्य किया था। दक्षिण भारत में नटराज शिव की पूजा अर्चना का भी विशेष विधान हैं (श्रीवास्तव, 2010: 68)। मऊ ग्राम से प्राप्त इस प्रतिमा में भगवान शिव की छह भुजाएं दिखाई गई हैं। शिव को कलाकार ने सौम्य मुद्रा में बनाया है। शिव के सिर पर जटा मुकुट, गले में कंठहार, भुजबंद एवं यज्ञोपवीत से

चित्र सं. 5 : नटेश शिव प्रतिमा

अलंकृत किया गया हैं। शिव के दाये हाथ में डमरु लिये दिखाया गया है। अन्य हाथों के आयुद्ध अस्पष्ट है। शिव के पैर नृत्यमुद्रा मे बनाये गये है। भगवान शिव का बायाँ पैर उठा हुआ व दायाँ पैर पाद पीठिका पर टिका हुआ हैं। शिव के दांये पैर के नीचे मृदंग वादक व बाँये पैर के नीचे उनका वाहन नंदी उनकी तरफ ऊपर की ओर देखता हुआ बनाया गया हैं। प्रतिमा के शीर्ष भाग में अंजली मुद्रा में दो सेवकों का अंकन हैं। एक नारी को अंजली मुद्रा में भगवान शिव के बायें पैर के समीप बनाया गया हैं। इस प्रतिमा के प्रस्तर खंड की माप 46×28×13 सेन्टीमीटर हैं। कला के आधार पर यह मूर्ति कलचुरी कालीन है (चित्र सं. 5)। यह मूर्ति भूरे बलुआ प्रस्तर पर निर्मित हैं।

प्रतिमा लगभग दसवीं–ग्यारहवीं शती ईस्वी की है। इसी प्रकार की मूर्ति का अंकन जागेश्वर मंदिर समूह के एक मंदिर के शुकनासा पर प्राप्त होता है और इसी आधार पर इसे नटराज मंदिर कहा जाता है (नीहारिका, 2019 : 27; चित्र सं. 2.8)। इससे मिलती–जुलती प्रतिमा मध्य प्रदेश के खंडवा जिले में अमरेश्वर मंदिर से भी प्राप्त हुई है जो परमार कालीन है (राठौड़, 2022 : 76–77)। कुमाऊं क्षेत्र से इस प्रकार की अनेक प्रतिमाएं प्राप्त हुई हैं (पाठक, 2016 : 105–111)।

चित्र सं. 6 : त्रिपुरान्तक शिव प्रतिमा

त्रिपुरान्तक शिव प्रतिमा (चित्र सं. 6)

इस प्रतिमा से सम्बन्धित कथा का विवरण महाभारत, मत्स्यपुराण, भागवतपुराण और हरिवंशपुराण में मिलता हैं (श्रीवास्तव, 2010: 79)। शिव की यह प्रतिमा अष्टभुजी हैं। शिव के इस त्रिपुरान्तक स्वरूप की प्रतिमा खण्डित हो चुकी है। शिव के सिर पर अलंकृत जटामुकुट, कर्णकुंडल, कण्ठमाला, वनमाला, यज्ञोपवीत, अधोवस्त्र एवं केयूर पहने प्रदर्शित हैं। शिव की मुख मुद्रा रुद्र रुप में है। शिव अपने दाये एवं बाये हाथ में त्रिशूल लिए हुए त्रिपुरासुर को मारते हुए दिखाये गये हैं। शिव के हाथों में कपाल, धनुष, बाण लिये हैं। शिव के तीन हाथ खण्डित हैं। भगवान शिव का बायाँ पैर पादपीठिका पर व दायाँ पैर दैत्य की पीठ पर रखे हुए बनाया गया हैं। भगवान शिव के सिर के समीप दायीं एवं बायीं ओर मालाधारी विद्याधरों का अंकन हैं।

पैरों के समीप कपाल लिये योगनियों को बनाया गया हैं। भगवान शिव के सिर के पीछे मनमोहक आभामंडल प्रदर्शित हैं। भगवान शिव की यह प्रतिमा लाल बलुआ प्रस्तर से निर्मित है। प्रतिमा खंड की माप 43×36×10 सेन्टीमीटर है। कला के आधार पर यह मूर्ति कलचुरीकालीन है। (चित्र सं. 6) यह मूर्ति भूरे बलुआ प्रस्तर पर निर्मित हैं। यह प्रतिमा लगभग दसवीं–ग्यारहवीं शती ईस्वी की है (महोबिया एवं पराजपे, 2021: 26)। समान प्रकार की प्रतिमाएं सारनाथ संग्रहालय (नीहारिका, 2007:91–92, छायाचित्र सं. 25) और मध्य प्रदेश के खंडवा जिले में स्थित अमरेश्वर मंदिर (राठौड़, 2022:79–80) में भी देखी जा सकती हैं।

चित्र सं. 7 : हरिहर प्रतिमा

हरिहर प्रतिमा (चित्र सं. 7)

मऊ ग्राम से हरिहर की स्थानक प्रतिमा समभंग मुद्रा में प्राप्त हुई हैं। यह प्रतिमा चतुर्भुजी बनाई गयी है। हरिहर प्रतिमा की माप 102×53×6 सेन्टीमीटर हैं। प्रतिमा में बायाँ भाग विष्णु का बनाया गया है। प्रतिमा के बायी ओर के हाथों में चक्र और शंख को लिये दिखाया गया हैं। सिर के दाहिने भाग में किरीट मुकुट दिखाया गया है। इसी भाग में नीचे अंजली मुद्रा में भूदेवी को हाथ जोड़े दिखाया गया है। भगवान विष्णु के गले में कंठहार, एकावली, वनमाला, अधोवस्त्र, यज्ञोपवीत का अंकन

किया गया हैं। हरिहर प्रतिमा का दायाँ भाग शिव का बनाया गया हैं। शिव को हाथों में त्रिशूल एवं अक्षमाला लिये उत्कीर्ण किया हैं। प्रतिमा के दायें भाग के सिर को जटामुकुट से अंलकृत किया गया हैं। शिव के पैर के समीप शिवगण को अंजली मुद्रा में हाथ जोड़े बनाया गया हैं। प्रतिमा परिकर में शीर्ष भाग पर ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश का अंकन किया गया हैं। इस प्रतिमा के परिकर में भगवान विष्णु के दस अवतारों का भी अंकन किया गया हैं। कला के आधार पर यह प्रतिमा कलचुरी कालीन है। इस प्रतिमा का काल लगभग ग्यारहवीं व बारहवीं शती ईस्वी है (महोबिया एवं पराजपे, 2021:18)। यह प्रतिमा भूरे बलुआ प्रस्तर पर निर्मित है।

चित्र सं. 8 : भैरव प्रतिमा

भैरव प्रतिमा (चित्र सं. 8)

भैरव को शिव का पूर्णरूप माना गया है। शिव को काल–भैरव मी कहा गया। भैरव अनेक रूप माने जाते हैं (शुक्ल, 1956: 263–264)। शैवागमों में 64 प्रकार के भैरव का उल्लेख किया गया हैं। जिसका विभाजन आठ वर्गों में हुआ हैं। (श्रीवास्तव, 2010: 76) मऊ ग्राम से प्राप्त भैरव की यह प्रतिमा का अर्द्धभाग खण्डित है। इसमें भैरव की मुख मुद्रा को रौद्र रूप में दिखाया गया है। उन्हें जटामुकुट, कर्ण कुंडल धारण किये हुए दिखाया गया हैं। इस प्रतिमा प्रस्तर खंड की माप 23×13×9 सेन्टीमीटर हैं। कला के आधार पर यह मूर्ति कलचुरी कालीन है। यह प्रतिमा भूरे बलुआ प्रस्तर पर

निर्मित है (चित्र सं. 8)। इस प्रतिमा का काल लगभग दसवीं–ग्यारहवीं शती ईस्वी हैं।

गौरी प्रतिमा (चित्र सं. 9)

श्रीमद्भागवत में गौरी के स्वरूप का चित्रण किया गया है। प्रतिमाशास्त्र के अनुसार गौरी की प्रतिमा चतुर्भुजी होनी चाहिए। उनके हाथों में अक्षमाला, शिवलिंग, गणेश की मूर्ति तथा कमण्डल होना चाहिए। उनके दो हाथों में अक्षमाला या पद्म होना चाहिए और दो हाथ वरद या अभय मुद्रा मे होना चाहिए (सिन्हा व दिनेशचन्द्र,

चित्र सं. 9 : गौरी प्रतिमा

1990:59)। गौरी की यह प्रतिमा स्थानक मुद्रा में अंकित है। देवी को कंठहार, एकावली, करधनी, अधोवस्त्र से युक्त दिखाया गया हैं। देवी के सिर के पीछे कलात्मक आभामंडल प्रदर्शित है। देवी की प्रतिमा चतुर्भुजी है, उनके निचले बायें हाथ में कमंडल व ऊपरी बाएं हाथ में पद्म पीठिका पर गणेश अंकित हैं। ऊपरी दायें हाथ में पीठिका के ऊपर शिवलिंग अंकित हैं। देवी के निचले दाये हाथ में अक्षमाला का अंकन है। प्रतिमा की माप 36×20×8 सेन्टीमीटर हैं। कला के आधार पर यह मूर्ति कलचुरी कालीन है। यह मूर्ति भूरे बलुआ प्रस्तर पर निर्मित है (चित्र सं. 9)। इस प्रतिमा का

काल लगभग दसवीं–ग्यारहवीं शती ईस्वी है।

कार्तिकेय प्रतिमा (चित्र सं. 10)

हिन्दू देव परिवार में स्कन्द–कार्तिकेय का महत्त्वपूर्ण स्थान हैं। 'मत्स्यपुराण' के अनुसार कार्तिकेय प्रतिमा को कमल सदृश वर्णवाले, सुकोमल कुमार के रूप में, दण्डधारी, मयूरासीन बताया गया है। उन्हें द्विभुजी, चतुर्भुजी और द्वादशभुजी रूप में दिखाया जाना चाहिए (श्रीवास्तव, 2010: 148)। मऊ ग्राम से प्राप्त कार्तिकेय की चतुर्भुजी प्रतिमा को द्विभंग मुद्रा में दिखाया गया है। उनके तीन मुख दिखाए गए हैं,

चित्र सं. 10 : कार्तिकेय प्रतिमा

कार्तिकेय को जटा मुकुट, कर्ण–कुंडल, वनमाला से युक्त दिखाया गया हैं। उनके हाथों में कुक्कुट, शक्ति, पाश, श्रीफल लिये दिखाया गया हैं। इस प्रतिमा के पादपीठ में दायीं ओर उनके वाहन मयूर को भी प्रदर्शित किया गया हैं। कार्तिकेय के बाएं पैर के नीचे पाद पीठ पर अनुचरों को अंजली मुद्रा में प्रदर्शित किया गया हैं। कार्तिकेय प्रतिमा की माप 30×18×8 सेन्टीमीटर है। शिल्पकला के आधार पर यह प्रतिमा कलचुरी कालीन है। यह प्रतिमा भूरे बलुआ प्रस्तर पर निर्मित है (चित्र सं. 10)। इस प्रतिमा का

समय लगभग दसवीं–ग्यारहवीं शती ईस्वी हैं।

चित्र सं. 11 : कार्तिकेय प्रतिमा

कार्तिकेय प्रतिमा (चित्र सं. 11)

मऊ ग्राम से प्राप्त कार्तिकेय की यह चतुर्भुजी प्रतिमा द्विभंग मुद्रा में अलंकृत है। प्रतिमा में देवता के तीन मुख दिखाए गए हैं। कार्तिकेय सिर पर मुकुट, गले में कंठ–हार, यज्ञोपवीत, वनमाला, कर्ण– कुंडल तथा धोती पहने हुए हैं। कार्तिकेय को तेजस्वी रुप में दिखाया गया है। उनके हाथों में ध्वजपताका, पाश, शक्ति एवं श्रीफल लिये बनाया गया हैं। कार्तिकेय के पैर के समीप उनके वाहन मयूर का भी सुन्दर अंकन किया गया हैं। मयूर को श्री फल खाते हुए प्रदर्शित किया गया है। प्रतिमा के बांयी ओर अंजली मुद्रा में सेवक का अंकन किया गया हैं। प्रतिमा की माप 34×20×8 सेन्टीमीटर है। कला के आधार पर यह मूर्ति कलचुरी कालीन है (चित्र सं. 11)। इस प्रतिमा का काल लगभग दसवीं–ग्यारहवीं शती ईस्वी है (महोबिया एवं पराजपे, 2021: 21)। यह प्रतिमा भूरे बलुआ प्रस्तर पर निर्मित है।

शैवाचार्य प्रतिमा (चित्र सं. 12)

इस प्रतिमा में शैवाचार्य को चौकी के ऊपर पद्मासन मुद्रा में विराजमान दिखाया गया है। प्रतिमा के हाथ खंडित अवस्था में है। शैवाचार्य के सिर पर कलात्मक

चित्र सं. 12 : शैवाचार्य प्रतिमा

जटा मुकुट, चक्षु, नासिका, भौहें, लंबी मूछें, दाढ़ी, कर्ण–कुण्डल, बाजूबंद, यज्ञोपवीत दृश्यमान हैं। शैवाचार्य के गले में रुद्राक्षमाला का अंकन किया गया है (चित्र सं. 12)। इस प्रतिमा की माप 64×23×8 से.मी.है। कला के आधार पर यह मूर्ति कलचुरी कालीन है। इस प्रतिमा का काल लगभग बारहवीं शती ईस्वी है।

ब्राह्मी प्रतिमा (चित्र सं. 13)

चित्र सं. 13 : ब्राह्मी प्रतिमा

ब्रह्मा के द्वारा भेजी हुई शक्ति का नाम ब्राह्मी कहा गया है। इनकी वेशभूषा व स्वरूप व वाहन ब्रह्मा के ही समान होने चाहिए। देवतामूर्तिप्रकरण में वर्णित है की देवी को पुस्तक, माला, पद्म एवं एक हस्त वरद मुद्रा में होने का विधान हैं (श्रीवास्तव, 2010: 114–115)। मऊ ग्राम से एक प्रतिमा देवी ब्राह्मी की मिली है। देवी की प्रतिमा त्रिभंग मुद्रा में हैं। देवी त्रिमुखी व प्रभामंडल से युक्त है। उन्हें आभूषणों से सुसज्जित किया गया हैं। देवी के गले में हार, कानों में कुंडल व धोती पहने हुए दिखाया गया है। देवी के ऊपरी बायें हाथ में पुस्तक एवं निचले बाये हाथ में कमण्डल का अंकन हैं। देवी का निचला दाहिना हाथ अभय मुद्रा में है एवं ऊपरी दाहिने हाथ में पद्म लिये दिखाया गया है। देवी के बाँयी ओर अजंली मुद्रा में एक सेविका का अंकन हैं। यह मूर्ति भूरे बलुआ प्रस्तर पर निर्मित है। प्रतिमा की माप 28×16×5 सेन्टीमीटर हैं। कला के आधार पर यह मूर्ति कलचुरी कालीन है (चित्र सं. 13)। इस प्रतिमा का काल लगभग दसवीं–ग्यारहवीं शती ईस्वी है।

अग्नि प्रतिमा (चित्र सं. 14)

चित्र सं. 14 : अग्नि प्रतिमा

अग्नि यज्ञ के महत्वपूर्ण देवता के रुप में प्राचीन काल से महत्वपूर्ण रहे है। अग्नि देव को गृहदेवता के रुप में भी पूजा जाता था। अग्निपुराण के अनुसार अग्नि को

बकरे पर सवार व शक्ति धारण किये स्थापित करने का विधान हैं। रूपमंडन में उन्हें मेष पर सवार व हाथों में शक्ति, कमण्डलु लिये हुए तथा ज्वालापुज से घिरे हुए बताया गया है (श्रीवास्तव, 2010: 83–84)।

मऊ ग्राम से प्राप्त चतुर्भुजी अग्निदेव को पादपीठिका पर कमलपुष्प पर खड़े हुए बनाया गया हैं। देवता का मुख आकर्षक बनाया गया है। सिर पर जटाएं, लम्बी दाड़ी, मूँछे, यज्ञोपवीत को अंकित किया गया हैं। देवता की नाभि को आकर्षक रुप में बनाया गया है। उल्लेखनीय है कि नाभि चक्र को अग्नि या सूर्य का केन्द्र भी माना जाता है। देवता पैरों में खड़ाऊ पहने हुए शोभायमान हैं। अग्निदेव को हाथों में कमण्डल, ज्वाला, अक्षमाला एवं शक्ति लिये दिखाया गया हैं। बायें हाथ को वरद मुद्रा में बनाया गया है, जिसमे देव अक्षमाला लिये हुए है। देवता के पैरों के समीप अंजिली मुद्रा में चार सेविकों को हाथ जोड़े बनाया गया हैं। प्रतिमा के शीर्श भाग पर दो मालाधारी विद्याधरों का अंकन किया गया हैं। यह प्रतिमा भूरे बलुआ पत्थर से बनी हुई हैं (चित्र सं. 14)। प्रतिमा की माप 30×18×3 से.मी. हैं। कला के आधार पर यह मूर्ति कलचुरी कालीन है। इस प्रतिमा का काल लगभग दसवीं–ग्यारहवीं शती ईस्वी है।

चित्र सं. 15 : सूर्य प्रतिमा

सूर्य प्रतिमा (चित्र सं. 15)

सूर्योपासना का प्राचीनतम उल्लेख ऋग्वेद में किया गया है। इसमें उन्हें पापनाशक, विष को दूर करने वाला, शारीरिक व्याधियों को हरने वाला बताया गया है। ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र तथा अग्नि से सूर्य की एकात्मकता बताते हुए महाभारत में उन्हें देवेश्वर कहा गया हैं। देवता मूर्ति प्रकरणम के अनुसार सूर्य प्रतिमा को दण्ड, पिंगल, अरूण तथा सूर्य पत्नियों के साथ निर्मित किया जाना चाहिए (साख्यतीर्थन, 1936: 66–67)। वृहत्संहिता, मत्स्यपुराण, अग्निपुराण, श्रीमद्भागवत, भविष्यपुराण, तथा शिल्परत्न में सूर्य प्रतिमा लक्षण बतलायें हैं।

ग्राम मऊ में कलचुरीकालीन कला में निर्मित कलात्मक द्विभुजी सूर्य प्रतिमा प्राप्त हुई है। सूर्य प्रतिमा की भुजाएँ खण्डित हैं किन्तु भुजाओं में धारण किये हुए सनाल कमल दृष्टव्य है। सूर्यदेव को स्थानक मुद्रा में प्रदर्शित किया गया है। इस सूर्य प्रतिमा के पादपीठ पर रथ में जुते सात अश्वों को उत्कीर्ण किया गया हैं। सूर्य प्रतिमा का मनमोहक सुन्दर मुखमण्डल बनाया गया है। प्रतिमा में किरीटमुकुट और कर्णकुण्डल स्पष्ट रूप से दर्शित हैं। वनमाला और कटिमेखलाधारी देवता के बाये एवं दांये पार्श्व में सूर्य की पत्नियां उशा एवं प्रत्युशा को दिखाया गया हैं। प्रतिमा के शीर्श भाग में मालाधारी गंधर्वो कां अंकन हैं। सूर्यदेव की इस प्रतिमा के दाँयें पार्श्व की आकृति खण्डित हो चुकी है। इस सूर्य प्रतिमा के निर्माण में मूर्ति निर्माण के निर्देशों का पूर्ण रुप से पालन किया गया है तथा शिल्प परम्परा का निर्वाह किया गया है। भगवान सूर्य को जूते पहने दिखाया गया हैं। पैरों के मध्य सूर्य के रथ का सारथी अरुण खडा है। पैरों के दाये एवं बाये दण्डी और पिंगल को बैठे हुए दिखाया गया हैं। सूर्य प्रतिमा के बायी ओर वसु को बनाया गया है। यह प्रतिमा लाल बलुआ पत्थर पर बनी है (चित्र सं.15)। कला के आधार पर यह प्रतिमा कलचुरीकालीन है। इस प्रतिमा का काल लगभग ग्यारहवीं शती ईस्वी है। इस प्रतिमा का माप 71×46×8 सेन्टीमीटर है।

युगल प्रतिमा (चित्र सं. 16)

मऊ ग्राम से एक अत्यन्त सुन्दर युगल प्रतिमा मिली है। इस प्रतिमा में नर–नारी को अलिंगन मुद्रा में एक दूसरे को निहारते हुए दिखाया गया हैं। यह मूर्ति सम्भवतः कलचुरी कालीन मंदिर की बाह्य दीवार पर लगाई गई होगी। युगल आकृतियों को मंदिरों के प्रवेश द्वारों, स्तंभों के आधारों पर स्थापित करने का विधान

चित्र सं.16 : युगल प्रतिमा

था। साहित्य के अनुसार युगल मूर्तियाँ यथार्थ में सृष्टि के विकासक्रम का प्रतीक हैं, ये अनुराग तथा समर्पण के भावों को व्यक्त करती है। इन प्रतिमाओं से तत्कालीन ललितकलाओं की जानकारी भी होती है। इन प्रतिमाओं के माध्यम से तत्कालीन समय में आनंदमय तथा समृद्धमय जीवन की झलक मिलती हैं। इस प्रतिमा को कलात्मकता व चारुतत्व से परिपूर्ण बनाया गया है। प्रतिमा में नर–नारी के शरीर पर अधोवस्त्रों का सुन्दर अंकन किया गया हैं। प्रतिमा में नारी के स्तनों के ऊपर से सुन्दर हार का अंकन किया गया है। प्रतिमा में स्त्री का बाया हाथ एवं पुरुश का दाया हाथ खण्डित हो चुके है। नारी प्रतिमा को क्षीण कटि, गहरी नाभि एवं उन्नत स्तनों के साथ सौन्दर्यत्व से परिपूर्ण बनाया गया हैं। इस प्रतिमा को बड़े ही मनमोहक ढंग से बनाया गया है। अंग–प्रत्यंग को सुघड़ता से उत्कीर्ण किया गया है। अधोवस्त्र स्खलित होते हुए प्रदर्शित किये गये हैं। नारी के कोमल अर्द्धनग्न शरीर की इंद्रियाग्राहिता, अत्यंत सीमित रेखीयता के अनुशासन से नियंत्रित की गयी हैं। (चित्र सं. 16) यह प्रतिमा त्रिभंग मुद्रा में उत्कीर्ण है। इस प्रतिमा का माप 43×18×8 सेन्टीमीटर है।

सारांश

इस प्रकार कहा जा सकता है कि शोध पत्र में मऊ ग्राम के खेरमाता मढ़िया परिसर से प्राप्त नवीन कलचुरी कालीन प्रतिमाओं के माध्यम से तत्कालीन समाज के धार्मिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक पक्षों की महत्वपूर्ण जानकारी मिलती हैं। इस पुरास्थल से कलचुरीकालीन शैव, वैष्णव एवं शाक्त धर्म से संबंधित प्रतिमाएँ प्राप्त हुई हैं। यह प्रतिमाएँ लगभग दसवीं शती ईस्वी से लेकर बारहवीं शती ईस्वी तक की हैं। इस शोध पत्र के माध्यम से बघेलखण्ड क्षेत्र में शैव, सौर एवं शाक्त सम्प्रदायों की जानकारी मिलीं हैं। इस पुरास्थल से उमा–महेश्वर, हरिहर प्रतिमा, कार्तिकेय प्रतिमा, सूर्य प्रतिमा, ब्रह्माणी, अग्नि गौरी एवं अन्य देवी प्रतिमाएँ प्राप्त हुई हैं। अतः स्पष्ट है कि यह क्षेत्र धार्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण रहा है। यहाँ पर सभी धर्मो का सम्यक विकास हुआ। कलचुरीकालीन समाज में जैन धर्म, शैव धर्म, वैष्णव धर्म, सौर धर्म, शाक्त धर्म इत्यादि का बोलबाला था। कलचुरीकालीन प्रशासक भी सभी धर्मो को समान रुप से महत्व देते थे। इसी कारण उन्होंने सभी धर्मो के देवी देवताओं की प्रतिमाओं का निर्माण करवाया था। इस क्षेत्र मे शैव धर्म का अधिक प्रचार प्रसार था। इसी कारण यहाँ उमा–महेश्वर की अनेक प्रतिमाएँ प्राप्त हुई हैं। कलचुरी नरेश भी शैव धर्म के अनुयायी थे। देवी प्रतिमाओं की प्राप्ति से स्पष्ट है कि इस क्षेत्र मे शाक्त धर्म का भी प्रचार प्रसार था। इस क्षेत्र में त्रिपुरी के कलचुरियों ने प्रतिमाओं एवं मंदिरों का निर्माण करवाया था। शहडोल जिले का मऊ ग्राम एक काफी समृद्ध धार्मिक पुरास्थल कहा जा सकता है। यहाँ से प्राचीन काल की काफी धार्मिक पुरासमाग्री प्राप्त हो चुकी हैं। यहाँ से गाणपत्य साम्प्रदाय, शैव साम्प्रदाय, वैष्णव साम्प्रदाय, शाक्त सम्प्रदाय एवं सौर सम्प्रदाय की सम्मिलित प्रतिमाएँ प्राप्त हुई हैं। उपर्युक्त प्रमाणों सें स्पष्ट होता है कि इस क्षेत्र में सभी सम्प्रदायों को मानने वाले लोग तत्कालीन समाज में रहते होगे। इस पुरास्थल से प्राप्त शाक्त व शैव धर्म से सम्बधित पुरावशेषों से इस क्षेत्र की संस्कृति में उक्त सम्प्रदायों की व्यापकता सिद्ध होती हैं।

संदर्भ

- चढ़ार, मोहनलालः 2017, "अमरकंटक क्षेत्र का पूरावैभव", एसएसडीएन प्रकाशन, नई दिल्ली।
- पाठक, शालिनी : 2016, कुमाऊं की नटराज प्रतिमाओं का अखिल भारतीय

परिप्रेक्ष्य में अध्ययन, *'अर्णव'* भाग V, नं.1, 2016, अर्णव शोध संस्था, वाराणसी।

- महोबिया, पी.सी, पराजपे प्रकाशः 2021, सर्वेक्षण प्रतिवेदन, जिला पुरातत्व संघ, शहडोल एवं पुरातत्व अभिलेखागार एवं संग्रहालय मध्यप्रदेश शासन, भोपाल।
- नीहारिका : 2007, सारनाथ : अतीत और वर्तमान (एक कालयात्रा) हरमन पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली।
- नीहारिका : 2019, जागेश्वर टेम्पल्स, आर्कियो कल्चरल पर्सपेक्टिव, बी.आर. पब्लिशिंग कारपोरेशन, दिल्ली।
- राठौड़, निकिता : 2022, रीविजिटिंग द ग्लोरियस पास्ट एण्ड एक्सक्वीज़िट आर्ट ऑफ द अमरेश्वर टेम्पल, *'अर्णव'* भाग XI, नं. 2, 2022, अर्णव शोध संस्था, वाराणसी।
- राव, टी.एन.गोपीनाथः 1956, "एलीमेंट ऑफ हिन्दू आइक्नोग्राफी", कलकत्ता।
- साख्यतीर्थन, उपेन्द्र मोहनः 1936, देवता मूर्ति प्रकरणम्, कलकत्ता संस्कृत ग्रन्थमाला, कलकत्ता।
- सिन्हा कमलेश व दिनेशचंद्रः1990, भारतीय प्रतिमा विज्ञान, अयन प्रकाशन, नई दिल्ली।
- शर्मा, राजकुमारः 1971, मध्यप्रदेश के पुरातत्व का सन्दर्भ ग्रन्थ, मध्यप्रदेश ग्रन्थ अकादमी, भोपाल।
- शुक्ल, द्विजेन्द्रनाथ, 1956 : 'प्रतिमा विज्ञान' वास्तु वङ्ग्मय प्रकाशन, लखनऊ।
- श्रीवास्तव, ए. एलः 1998, प्राचीन भारतीय देव मूर्तियाँ, संस्कृत विभाग, उत्तरप्रदेश शासन, लखनऊ।
- श्रीवास्तव, बलरामः 1993, "रूपमंडन" द्वितीय संस्करण, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।
- श्रीवास्तव, ब्रजभूशणः 2010, "प्रतिमा विज्ञान एवं मूर्तिकला", पंचम संस्करण, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

★★★